

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई) बनाम गुरु: एक विश्लेषण

डॉ.मौ.इमरान खान

अध्यक्ष/असि.प्रोफेसर-हिन्दी विभाग, एम.जी.एम.(पी.जी.) कॉलेज, सम्भल (उ.प्र.)

E.mail - mohdimranm@gmail.com

Article: Received: 01/06/2026, Returned: 16/06/2026, Accepted: 25/06/2026, Published:30/06/2026.
D.O.I. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22935948>



@ 2026 The Author(s). This is an Open Access article/ Journal distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are properly credited. (<https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>)

सारांश- संसार में गुरु शिष्य परम्परा विश्व संस्कृति का प्राण है यदि यह परम्परा नहीं होती तो आज हम सांसारिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक ज्ञान से वंचित रह जाते। जो दुनिया के लिए अपूर्वनीय क्षति होती। भारतीय संस्कृति में गुरु शिष्य परम्परा के अंतर्गत गुरु शिष्य को ज्ञान देता है फिर वही शिष्य गुरु के रूप में दूसरों को शिक्षा देता है यही गुरु शिष्य परम्परा अनंतकाल से निर्वाध रूप से चली आ रही है। हिंदी साहित्य, संस्कृत साहित्य, उर्दू साहित्य तथा अंग्रेजी साहित्य आदि में भी गुरु शिष्य परम्परा का विस्तृत इतिहास मिलता है। इसी परम्परा का निर्वाहन प्राचीनकाल से गुरुकुलों, आश्रमों और खानकाहों में देखने को मिलता है। संत कबीर ने तो "गुरु को ईश्वर से भी बड़ा माना है क्योंकि गुरु ही शिष्य को ईश्वर के होने का बोध कराता है यदि गुरु ईश्वर के बारे में नहीं बताता तो उसे ईश्वर का साक्षात्कार नहीं होता।" ¹ सूफी परम्परा के प्रतिनिधि कवि मलिक मोहम्मद जायसी के विचार भी कबीर के विचारों से बहुत मेल खाते हैं। दोनों ही गुरु को मनुष्य के ज्ञान व संसार के उत्थान के लिए परम आवश्यक मानते हैं। जायसी कहते हैं- "जिस गुरु (तोते) ने मुझे (राजा रत्नसेन) मार्ग दिखाया। वह उनके जीवन का महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। उनके बिना यह संसार निर्गुण है अर्थात् व्यर्थ है।" ² हम यह भी कह सकते हैं कि गुरु के मार्गदर्शन के अभाव में मनुष्य सांसारिक विषयवासनाओं में फँसकर अपना जीवन व्यर्थ कर लेता है। तभी तो जायसी ने इस संसार को हाट कहा है। गुरु शिष्य परम्परा वैदिककाल के पूर्व से चली आ रही निर्वाध श्रृंखला है। इसमें गुरु शिष्य को ज्ञान संप्रेषित करता है। भारतीय ज्ञान परम्परा के देवाधिदेव महादेव प्रथम गुरु माने जाते हैं इनकी शिष्य परम्परा में महर्षि अत्रि, जमदग्नि, कश्यप, विश्वामित्र, गौतम, भारद्वाज एवं वशिष्ठ सप्त ऋषि माने जाते हैं। इन्होंने ही महादेव से ज्ञान प्राप्त कर संसार में इसका प्रचार प्रसार किया। इस गुरु परम्परा को आगे बढ़ने में गुरु दत्तात्रेय का नाम भी आग्रणी है। जगतगुरु आदि शंकराचार्य तथा गुरु गोरखनाथ की भी पुष्ट परम्परा रही है। इन्होंने अपने साहित्य एवं दार्शनिक मतों से समाज को बहुत लाभ पहुँचाया। गुरु परम्परा में हमारे ऋषि व महर्षियों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्होंने भी आध्यात्मिक ज्ञान से संसार को नवीन दिशा प्रदान की तथा साथ ही एक उन्नत समाज के निर्माण में आपकी शिक्षाओं एवं दार्शनिक मान्यताओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उदाहरण स्वरूप परशुराम, वशिष्ठ, विश्वामित्र, व्यास, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य एवं अगस्त्य ऋषि आदि।

बीज शब्द- कृत्रिम बुद्धिमत्ता, पीरो-मुर्शिद, हज़रत, संवेदनाएं, विषमताएं, विषयवासनाएं, आदर्शवादी, संस्कारवान, प्रशस्त, उद्धार, मकड़जाल।

प्रस्तावना- गुरुकुलों, आश्रमों तथा खानकाहों में पाली बड़ी यह परम्परा आज भी विद्यमान है। इस परम्परा के प्रमुख गुरुओं एवं पीरो-मुर्शिदों की श्रृंखला में- गोविंदपाद के शिष्य जगतगुरु आदिशंकराचार्य, शंकरानंद के शिष्य विद्यारण्य, ईश्वरपुरी के शिष्य महाप्रभु चैतन्य, पूर्वनंद के शिष्य वीरजानंद, वीरजानंद के शिष्य दयानंद, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, समर्थ रामदास के शिष्य शिवाजी। सूफी परंपरा में हज़रत अब्दुल कादिर ज़िलानी (गौसे-ए-पाक) के पीरो मुर्शिद हज़रत अबू सईद मुबारक मखज़ूमी, हज़रत मोइनुद्दीन चिश्ती (ख्वाजा गरीब नवाज़) इनके मुर्शिद हज़रत ख्वाजा उस्मान हारुनी, हज़रत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के मुर्शिद हज़रत मोइनुद्दीन चिश्ती, हज़रत साबिर पाक, हज़रत निजामुद्दीन औलिया और हज़रत जमालुद्दीन हांसी के मुर्शिद बाबा फरीदुद्दीन गंजशकर, हज़रत शमसुद्दीन पानीपत के मुर्शिद हज़रत साबिर पाक, हज़रत अमीर खुसरो के मुर्शिद हज़रत निजामुद्दीन औलिया थे। यह सब भी अपने मुर्शिद की ऐसी ही खिदमत करते थे जैसे गुरुकुलों व आश्रमों में शिष्य अपने गुरुओं की सेवा करते थे, तथा शिष्यों का चुनाव भी गुरुकुल की भाँति बहुत ही सोच, समझ तथा परखकर तब ही किया जाता था जब उनकी कसौटी पर खरा उतरता था। आज

यह परम्परा विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के द्वारा आगे बढ़ रही है। आज ज्ञान का स्तर उतना अध्यात्मिक, दार्शनिक व नैतिक नहीं रहा। अब शिक्षा व्यवसायिक तथा व्यवहारिक ज्ञानपरक होती जा रही है।

21वीं शताब्दी में आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता के दौर में मनुष्य ए.आई.को गुरु के पर्याय के रूप में महत्व देने लगा है। आज की डिजिटल दुनिया में जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता गूगल जैसे प्लेटफार्म अपने अंदर अथाह सूचनाएं एक ही क्लिक में पलक झपकते ही हमारी आंखों के सामने प्रकट हो जाती हैं इन प्लेटफार्म पर हमें किसी तथ्य, जानकारी या परिभाषा के लिए किसी पुस्तक या व्यक्ति का सहारा नहीं लेना पड़ता बस गूगल, क्रोम तथा ग्रीक आदि जैसे प्लेटफार्म पर जाकर अपना खोजी विषय टाइप करें क्लिक करते ही उक्त विषय से संबंधित जानकारी आपकी आँखों सामने होगी लेकिन इनके द्वारा उपलब्ध जानकारी में सन्देह की गुंजाइश रहती है किंतु मेरा मानना है कि सही सटीक जानकारी के लिए हमें गुरु और पुस्तकों पर ही निर्भर रहना ही पड़ेगा। इस माध्यम में समय जरूर व्यतीत होता है विषय के तथ्यों की जानकारी में सन्देह की गुंजाइश न के बराबर होती है। इसलिए गुरु का महत्व संसारान्त तक रहेगा, क्योंकि गुरु परम्परा भारतीय संस्कृति की ही नहीं अपितु विश्व संस्कृति की रीढ़ है।

गुरु की जीवन में उपयोगिता-गुरु भारतीय ज्ञान परम्परा में एक महत्वपूर्ण कड़ी है जो मनुष्य को भौतिक एवं आध्यात्मिक (जगत और परमात्मा) के बीच एक तादात्म्य स्थापित करता है मनुष्य को जीवन की सही राह दिखाने का कार्य गुरु द्वारा ही किया जाता है। वही परमतत्व तक ले जाने का कार्य करता है वही सांसारिक विषयवासनाओं तथा जीवनमरण से मुक्ति दिलाकर मनुष्य को मोक्ष प्राप्ति की राह दिखाता है। गुरु ही मनुष्य को जीवन के अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश में ले जाने का पुनीत कार्य करता है। मनुष्यों में नैतिक मूल्य तथा आदर्श समाज की स्थापना करने में उचित भूमिका निभाता है। स्कंदपुराण में गुरु का अर्थ- 'गु' का अर्थ है अंधकार तथा 'रु' का अर्थ है तेज प्रकाश अर्थात् अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला, अज्ञानता को दूर कर ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करने वाला गुरु कहलाता है।³ "गुरु शब्द का प्रथम वर्ण गु माया इत्यादि गुणों को प्रकट करने वाला है तथा द्वितीय वर्ण रू ब्रह्म का द्योतक है जो मोह या भ्रांति का विनाश करने वाला है।"⁴ "लगभग समस्त मध्यकालीन धर्म साधनाओं में गुरु का बहुत अधिक महत्व माना गया है संभवतः यह तांत्रिक का अवशिष्ट प्रभाव था क्योंकि जैन, बौद्ध, शैव, शाक्य सभी संप्रदायों में जब गुहा साधनाओं का समावेश हुआ तो गुरु की स्थिति बहुत महत्वपूर्ण होती गई, क्योंकि साधनाओं की प्रकृति इतनी दुरूह थी कि अज्ञानी साधक को गुरु का निर्देशन आवश्यक था।"⁵ गुरु शिष्य परम्परा का सबसे जीवन्त उदाहरण वेद हैं ऐसा प्रतीत होता है कि मानों वेदों का प्रादुर्भाव इसी परम्परा के लिए हुआ है। "वेदों का सार उपनिषद् हैं। उपनिषद् शब्द का अर्थ है ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरु के पास जाना।"⁶

मुण्डकोपनिषद् के अनुसार- "विद्या गुरु द्वारा शिष्य को परम्परा क्रम से प्रेषित की जाती है"⁷ गुरु की जीवन में उपयोगिता के संदर्भ में स्वामी तुलसीदास अपने महाकाव्यात्मक ग्रंथ रामचरितमानस में कहते हैं कि क्यों न कोई महादेव और ब्रह्म के समान हो परन्तु गुरु के बिना जीवन रूपी भवसागर को नहीं तर सकता अर्थात् गुरु जीवन रूपी भवसागर को पार कराने में सहायक सिद्ध होता है।⁸ गुरु ही मार्गदर्शक है वही मनुष्य को शिखर तक ले जाकर उनके भविष्य को आकार देने का कार्य करता है वही कठिन से कठिन परिस्थितियों से उभारने में सहायता करता है शिष्य के मन मस्तिष्क में कितने भी प्रश्न अथवा संशय हों उन्हें दूर करने का कार्य गुरु द्वारा ही संभव है। "संत कबीरदास ने विद्या को तीनों लोकों की सम्पदा माना तथा गुरु को यह सम्पदा प्रदान करने वाला श्रेष्ठ दाता माना है।"⁹ तिल्लोपा कहते हैं कि "समस्त लोक तथा पंडितों के लिए जो अगम्य है पर श्रीगुरु के प्रसन्न होने पर कौन ऐसी वस्तु है जो अगम रह जाए।"¹⁰ तभी तो कबीरदास अपनी वाणियों में सतगुरु पर ज्यादा जोर देते हैं। कबीर के अनुसार सतगुरु ही मनुष्य को सही मार्ग पर ले जाता है। अज्ञानता को दूर कर ज्ञान का प्रकाश दिखता है। आत्मज्ञान प्रदान कर शिष्य को परमात्मा से मिलाने का मार्ग प्रशस्त करता है। वहीं इसके विपरीत गुरु अज्ञानी हो तो शिष्य को पतन की ओर ले जाता है। कबीरदास कहते हैं कि "जिसका गुरु अंधा अर्थात् तत्त्व ज्ञानहीन हो तो उसका चेला निपट दृष्टिहीन होगा। इस तरह अंधे गुरु के द्वारा अज्ञानी शिष्य कभी आगे नहीं बढ़ सकता और यदि एक दूसरे को धकेलते हुए आगे बढ़ेंगे तो अवश्य ही कुएं में गिरेंगे अर्थात् अज्ञानता के गर्त में गिरकर नष्ट हो जाएंगे।"¹¹ गुरु शिष्य की अद्भुत परम्परा की परिकल्पना करते हुए श्रीराम परिहार अपनी पुस्तक बजे तो बंशी गुंजे तो शंख में लिखते हैं "गुरु बैठे हैं सामने शिष्य खाली मन का दोना लिए बैठा है गुरु की ललाट पर ज्योति बिंदु झलझल है। ज्ञान तेज बनाकर रोम रोम के गावक्षों से देख रहा है गुरु की दृष्टि शिष्य पर है आस-पास जाती है प्रकृति परिवेश को नहलाती है और दृष्टि कि वह कोर क्षितिजों पर फैल जाती है। शिष्य निहाल हो जाता है। गुरु शिष्य को गढ़ रहा है उसे समय की शिला पर खड़े राष्ट्र के अनुकूल व्यक्तित्व दे रहा है। शिष्य के प्रश्न बर्फ के ढेलों के समान पिघल कर पानी हो रहे हैं। शिष्य के अन्दर तरलता भर रही है गुरु शिष्य को निरुत्वार रहा है। शिक्षा, संस्कार व्यवस्था बनकर आप्लावित सिंधु के संतरण की हिम्मत बंधा रही है।"¹²

विचार बिन्दु- हमने इस शोधलेख के द्वारा कुछ बिंदुओं के माध्यम से कृत्रिम बुद्धिमत्ता से गुरु को श्रेष्ठ सिद्ध करने का छोटा सा प्रयास किया है जो निम्नलिखित है- (क) कृत्रिम बुद्धिमत्ता से हम केवल ज्ञान अर्जित कर सकते हैं शिक्षा नहीं। ज्ञान और शिक्षा दोनों अलग-अलग हैं अर्थात् एक ही नदी के दो किनारे हैं साथ हैं लेकिन मिल नहीं सकते। शिक्षा मनुष्य को

संस्कारवान बनती है यह एक तय और संगठित प्रक्रिया है। जो गुरुओं के द्वारा हमें प्राप्त होती है ज्ञान वह समझ और अनुभव है जो हम स्वयं जीवन में खुद की कोशिशों और समाज के भोगे हुए अनुभव से सीखते हैं।

(ख) कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमें पलक झपकते ही ज्ञान समेटकर हमारे सामने उपलब्ध करा देती है जबकि गुरु शिक्षा हमें ज्ञान के साथ-साथ आदर्शवादी, नैतिकतावादी, अध्यात्मवादी के साथ-साथ भौतिकवादी और संस्कारवान बनती है।

(ग) ए.आई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) हमें ज्ञान दे सकता है समस्याओं का समाधान नहीं समस्याओं से बाहर निकलने का मार्ग गुरु ही प्रशस्त करता है।

(घ) गुरु ही जगत का उद्धार कर सकता है वही ज्ञान के माध्यम से ईश्वर का बोध कराता है ए.आई ने तो हमें ज्ञान के मकड़जाल में उलझा दिया है।

उत्तर आधुनिकता के इस दौर में ए.आई.ने रक्षा, चिकित्सा तथा शिक्षा जगत आदि के क्षेत्र में नित नये कीर्तिमान स्थापित करते हुए अपना लोहा मनवा लिया है। शिक्षक के लिए ए.आई. प्रशासनिक कार्यों जैसे ग्रेडिंग, उपस्थित और सामग्री निर्माण को स्वचालित करके समय बचता है। जिससे वे छात्रों के साथ अधिक व्यक्तिगत रूप से जुड़ सकते हैं। लेकिन इससे हम वही ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं जो प्रोग्रामिंग के द्वारा इसमें फीड किया गया हो। केवल गुरु ही है जो हमें शिक्षा के साथ-साथ संस्कार तथा मानवीय संवेदनाएं प्रदान करता है। हमें हमारी सभ्यता, संस्कृति, परंपराओं, रूढ़ियों, विडंबना तथा अंधविश्वास से अवगत कराता है। गुरु ही हमें अंधकार से निकलकर ऐसे चौराहे पर लाकर खड़ा करता है जहाँ से हम दुनिया को समझ सकें और अच्छे-बुरे में भेद कर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकें। गुरु के गुणों के संदर्भ में कबीरदास जी का मत है कि "गुरु के गुणों का वर्णन इतना महान है कि पूरी धरती को कागज़ और सातों समुद्रों की स्याही बना दें तो भी गुरु के गुणों को पूरी तरह लिखना असंभव प्रतीत होता है।"¹³

प्रश्न यह खड़ा होता है कि जब ए.आई. द्वारा ज्ञान का हस्तांतरण बहुत ही प्रभावी ढंग से किया जा सकता है तो फिर गुरु की आवश्यकता क्यों? तो इसका सीधा सा उत्तर यह है कि गुरु केवल शिक्षक ही नहीं होता बल्कि वह एक मार्गदर्शक, संरक्षक एवं परामर्शदाता भी होता है वह अपने शिष्यों की कमजोरियों, आवश्यकताओं, क्षमताओं तथा उनकी चुनौतियों को भलीभाँति समझता है वह केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शन नहीं करता बल्कि भविष्य के पथ पर जीवन के लक्ष्यों और व्यक्तिगत विकास में भी सहायता प्रदान करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता हालांकि व्यक्तिगत सुझाव दे सकता है किंतु मानवीय सहानुभूति, नैतिकमूल्य, प्रेरणा और भावनात्मक समर्थन प्रदान नहीं कर सकता। यह कार्य केवल गुरु ही कर सकता है क्योंकि जीवन की प्रक्रिया में मानवीय संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं एक गुरु शिष्य का संबंध विश्वास, सम्मान और प्रेरणा पर आधारित होता है। गुरु छात्र को प्रेरित करता है उनकी क्षमताओं पर विश्वास करता है और उन्हें चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसके विपरीत ए.आई. या गूगल चाहे कितने भी उन्नत हो इस भावनात्मक जुड़ाव और व्यक्तिगत प्रेरणा को उत्पन्न नहीं कर सकते। कबीरदास कहते हैं "गुरु ज्ञान और संस्कार से शिष्य के जीवन को एक नया आकार देता है ठीक वैसा ही जैसे कुम्हार मिट्टी से घड़ा बनाता है वैसे ही गुरु शिष्य की बुराईयों और अवगुणों को दूर करता है। उसे मानसिक और भावनात्मक रूप से सहारा देता है।"¹⁴ कृत्रिम बुद्धिमत्ता सीधे उत्तर प्रदान करता है। जबकि एक गुरु शिष्य को आलोचनात्मक सोच विकसित करने, समस्याओं को हल करने और स्वयं को निष्कर्षों तक पहुँचाने में मदद करता है। वे प्रश्न पूछने, विश्लेषण करने और विभिन्न दृष्टिकोण पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करता है जिससे शिष्य में सोचने की क्षमता विकसित होती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक तकनीकी प्रणाली है जो कंप्यूटर या रोबोट आदि में मनुष्य की बुद्धिमत्ता की नकल करने के लिए मानव निर्मित की गई है जिसमें डेटा फीड किया जाता है। उसी के आधार पर वह अपना कार्य करता है जबकि गुरु मानवीय संवेदनों से युक्त व्यक्ति होता है। जो शिष्य के उज्ज्वल भविष्य के लिए भौतिक एवं आध्यात्मिक गुणों का संचार करते हुए हमारे जीवन में मार्गदर्शक बनाकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भक्तिकालीन रामभक्ति काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि तुलसीदास अपने महाकाव्यात्मक ग्रंथ रामचरितमानस में गुरु कृपा के संदर्भ में लिखते हैं कि "मैं उन गुरु महाराज के चरणों कमलों की वंदना करता हूँ जो कृपा के समुद्र और नर रूप में श्रीहरि (ईश्वर) हैं। जिनके वचन अज्ञानरूपी घने अंधकार को नष्ट करने के लिए सूर्य की किरणों के समान है।"¹⁵

कृत्रिम बुद्धिमत्ता में प्रोग्रामिंग डेटा सेट एल्गोरिदम के आधार पर सीखाता है इसका मात्र उद्देश्य केवल कार्यों को स्वचालित करना तथा डेटा आधारित समाधान प्रस्तुत करना है। यह समाज में लोगों के अंदर दक्षता का संचार करने में पूर्णतः सक्षम नहीं है। त्वरित उत्पन्न समस्या का समाधान करने में भी पूर्ण रूप से दक्ष नहीं होता जबकि इसके विपरीत गुरु के जीवन का केवल और केवल एकमात्र उद्देश्य होता है कि अपने शिष्य का सांसारिक और आध्यात्मिक रूप से समग्र विकास करना जिससे वह ईश्वर और संसार को भलीभाँति समझ कर सांसारिक प्रपंचों, विषमताओं व समस्याओं से बचकर जीवन में नैतिक मूल्यों को बढ़ावा दे सके। ए.आई. में मनुष्य की तरह भावनाएं और संवेदनाएं नहीं होती क्योंकि वह मानव निर्मित यंत्र है इसलिए यह तर्क और तथ्यों पर आधारित प्रतिक्रिया देता है। जबकि गुरु शिष्य का विश्वासपूर्ण और भावनात्मक संबंध होता है जो उसके व्यक्तिगत विकास में सहायक सिद्ध होता है। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, दार्शनिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक जैसे प्रश्नों पर इसकी समझ सीमित होती है उक्त संदर्भ

में कबीरदास का मत है "सच्चा गुरु मनुष्य को स्वयं के हृदय से मिलता है। जब मनुष्य अपने अंदर के अहंकार को त्याग कर पूरी तरह से खुद को समर्पित कर देता है तो उसे बाहरी गुरु की आवश्यकता नहीं रहती क्योंकि ज्ञान उसके हृदय में स्वतः ही प्रकट हो जाता है। हम ज्ञान पाने के लिए गुरु को इधर-उधर ढूँढते फिरते हैं। हमें इस बात का आभास नहीं होता कि गुरु तो हमारे भीतर ही मौजूद है। जैसे ही हम बाहरी दुनिया में गुरु की खोज छोड़कर अपने हृदय में झाँकते हैं वैसे ही हमें गुरु की उपस्थिति का ज्ञान हो जाता है।"¹⁶

निष्कर्ष- कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक मानव निर्मित उपकरण है जो विश्लेषण एवं स्वचालन में उत्कृष्ट है, जबकि गुरु एक मार्गदर्शक है जो जीवन के गहरे अर्थ और मूल्यों को समझने में मदद करता है। दोनों का महत्व उनके संदर्भों पर निर्भर करता है आधुनिकता के दौर में समाज का ए.आई. के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक होता जा रहा है वहीं दूसरी ओर गुरु के प्रति लोगों के अंदर नकारात्मकता पनप रही है। मनुष्यों की दृष्टि में गुरु का सम्मान अब वैसा नहीं रहा जैसा पिछले युगों में था। गुरु की सीमाएँ उनके बौद्धिक विकास, व्यक्तिगत अनुभव और ज्ञान समाज को एक सीमा तक ले जा सकता है लेकिन वह संदर्भों और मानवीय संवेदनाओं को गहराई से समझ सकते हैं। जैसे यदि हम ए.आई. से कहें कि विकल्प क एवं ख में से किसी एक का चुनाव हमारे लिए करें तो ए. आई. का सही जवाब होगा कि आप अपनी आवश्यकता अनुसार उक्त विकल्प में से किसी एक का चुनाव कर सकते हैं। जबकि गुरु अपनी बौद्धिकता एवं अनुभव के आधार पर उक्त दोनों विकल्पों के गुणों व अवगुणों का मूल्यांकन करके हमारे लिए जो ज्यादा उपयुक्त होगा वही चुनने के लिए प्रेरित करेगा।

ए.आई. एवं गुरु की कोई तुलना ही नहीं सकती क्योंकि ए.आई. सभी को समान समझकर एक ही तरह से ज्ञान एवं सूचनाओं प्रदान करता है। वहीं दूसरी ओर गुरु यह देखने का प्रयत्न करता है कि उसका कौन सा विद्यार्थी अधिक बुद्धिमान है और कौन सा बहुत ही कमजोर है। तब गुरु कक्षा में तरह-तरह के उदाहरण देकर उस कमजोर विद्यार्थी को भी बराबर लाने का प्रयत्न करता है। ऐसा केवल गुरु ही कर सकता है इसलिए कक्षा में दिया गया गुरु का ज्ञान अतुलनीय है। कबीरदास अपने प्रसिद्ध दोहे में के माध्यम से कहते हैं-"दीपक (आत्म और चेतना का प्रतीक) में तेल (शुद्धि या प्रेम) भर दिया गया है और एक ऐसी बाती (ज्ञान और चेतना प्रज्वलन है) जलाई गई है जो कभी बुझने वाली नहीं है। जब उसे सारा ज्ञान मिल जाएगा तो फिर कौन संसार रूपी बाज़ार में आना चाहेगा अर्थात् गुरु के माध्यम से शिष्य को भौतिक, अध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हो गया है।"¹⁷

अंततः हम यही कह सकते हैं कि समय और संदर्भों के अनुसार कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अत्यंत महत्व है बल्कि कुछ क्षेत्रों में तो अत्यंत ही सराहनीय कार्य किया है लेकिन आधुनिकता के दौर में भी गुरु का महत्व कम नहीं है और संसारान्त तक बना रहेगा।

सन्दर्भ सूची

1. गुरु गोविंद दोउ खड़े, काके लागू पाव।
बलिहारि गुरु आपणे, गोविन्द दियो बताय ।।
(<https://panobook.Com>)
2. गुरु सुआ जेही पंथ दिखावा।
बिन गुरु जगत को निरगुन पावा।।
(सम्पा. आचार्य रामचंद्र शुक्ल-पद्मावत, उपसंहार से)
3. गुकारत्त्वन्धकार क्ष्व रुकारस्तेज उच्यते।
अज्ञानग्रासकं ब्रह्म गुरुरेव न संशयः।। (स्कन्दपुराण उत्तराखण्ड 23)
4. गुकारःप्रथम वर्णो मायादिगुणभासकः।
रुकारो द्वितीयो ब्रह्म मायाभ्रान्ति विनाशनम्।। (स्कन्दपुराण उत्तराखण्ड 24)
5. सम्पा. धीरेन्द्र वर्मा-हिन्दी साहित्य कोश भाग 1, तृतीय सं. 1985, प्रकाशक ज्ञानमण्डल लि. वाराणसी पृ. 234.
6. प्रो. पारसनाथ द्विवेदी-वैदिक साहित्य का इतिहास, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी पृ. 146.
7. मुण्डकोपनिषद् 1.1.1-2
8. गुरु बिनु भवनिधि तरइ न कोई। जौं बिरंचि संकर सम होई।।
(तुलसीदास, रामचरितमानस-उत्तरकाण्ड, नौवां सं. 2021, गीता प्रेस गोरखपुर) पृ. 1075.
9. गुरु समानदाता नहीं, याचक शीष समान।
तीनों लोक की सम्पदा, सो गुरु दीन्ही दान।। ([https:// satyalog.wordpress.com](https://satyalog.wordpress.com))
10. तिल्लोपा-दोहाकोश
11. जाका गुरु भी अंधला, चेला खरा निरंध।
अंधा-अंधा ठेलिया, दून्यू कूप पड़ंत ।।

- (सम्पा. डा.श्यामसुन्दरदास-कबीर ग्रंथावली,सं.2041वि. न.प.सभा,काशी पृ.2.)
12. श्रीराम परिहार-बजे तो वंशी, गूँजे तो शंख,द्वितीय सं.2011,वैभव प्रकाशन,रायपुर (छत्तीसगढ़) पृ.30.
13. सब धरती कागज करूँ,लिखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूँ,गुरु गुण लिखा न जाये।।
(सम्पा. डा.श्यामसुन्दरदास-कबीर ग्रंथावली)
14. गुरु कुम्हार शिष्य घट है,गाढ़ि-गाढ़ि काढ़े खोट।
अन्तर हाथ सहार दै,बाहर मारै चोट।।
(श्रीराम परिहार-बजे तो वंशी,गूँजे तो शंख, द्वितीय सं.2011 वैभव प्रकाशन रायपुर,छत्तीसगढ़) पृ.32.
15. बंदऊँ गुरु पद कंच कृपा सिन्धु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु वचन रवि कर निकर।।
(तुलसीदास-रामचरितमानस,बालकाण्ड,गीता प्रेस गोरखपुर पृ.18.)
16. अब गुरु दिल में देखिया,गावन को कछु नाहिं।
कबिरा जब हम गावते,तब जाना गुरु नाहिं।।
(आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी-कबीर,छटा सं.1990,राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली) पृ.267.
17. दीपक दीया तेल भरि,बाती दर्ई अधटट।
पूरा किया बिसाहूणाँ,बहुरि न आँवौ हटट।।
(सम्पा. डा.श्यामसुन्दरदास-कबीर ग्रंथावली सं.2041वि.न.प.सभा, काशी) पृ.2

Declaration by Author (s): "I/We hereby declare that this manuscript is my/our original work, free from plagiarism, and that all sources and any use of Artificial Intelligence tools for content generation or editing have been fully disclosed and verified for accuracy." **डॉ.मौ.इमरान खान**